

Padma Vibhushan



MAULANA WAHIDUDDIN KHAN (POSTHUMOUS)

Maulana Wahiduddin Khan was an Islamic spiritual scholar, who adopted peace as the mission of his life. Known for his Gandhian views, he considered non-violence as the only method to achieve success.

2. Born on 1st January, 1925 in Azamgarh, the Maulana Wahiduddin Khan was educated in a traditional seminary, the Madrasatul Isiah, in Sarai Mir, near Azamgarh. Since his family was involved in India's freedom struggle from the very outset, as a very young man, he became a staunch nationalist with Gandhian values in the period prior to India gaining its independence in 1947, and he continued to be such till death. He became well-versed in both classical Islamic learning and modern science as a result of his quest and resulting research.

3. Maulana Wahiduddin Khan realized the need to present Islamic teachings in the style and language of modern times. His primary concern has been to present Islam as a perfectly suitable ideology of peace for the modern age. Having a deep understanding of the original Arabic scriptures and with his extensive research in the fields of modern thought and science, he has presented to the world- in the modern idiom-the real face of Islam, based as it is on peace, tolerance and co-existence. He dispelled the notion that Islam is a religion of violence, a notion that has gained currency in the present times, because of Islam being misrepresented and therefore misunderstood.

4. Maulana Wahiduddin Khan established the Islamic Centre at New Delhi in 1970. Subsequently, the organ of the Centre, Al-Risala—the monthly magazine—was launched in Urdu in 1976. This journal, consisting entirely of his own articles, quickly acquired a wide circulation throughout the Urdu-speaking world, and has done much to make people understand the peaceful face of Islam, to awaken in Muslims a new awareness of their social responsibilities and to promote positive thinking and action. Its English version, published under the title Spirit of Islam, helps to re-engineer minds towards positivity so that they become peaceful members of society.

5. Maulana Wahiduddin Khan established CPS International, i.e. Centre for Peace and Spirituality in January 2001. As is apparent from its name, the organization aims to promote and reinforce the culture of peace through mind-based spirituality. Under his patronage and inspired by his spiritual wisdom, the activities of the centre that include peace and inter-faith efforts help individuals understand the importance of peace and become peaceful. He translated the Quran into Urdu along with a commentary in the form of Tazkirul Quran. It's English, The Quran and Hindi, Pavitra Quran, versions are widely read. He has authored over 200 books on Islam, prophetic wisdom, spirituality and peaceful co-existence in a multi-ethnic society.

6. Maulana Wahiduddin Khan is the recipient of several national and International awards. He put forward a proposal for a worldwide movement for nuclear disarmament at a peace forum held at Zug in Switzerland in 2002. On the occasion, he was awarded the Demiurgus Peace International Award by the Nuclear Disarmament Forum AG. He has been honoured with title of Ambassador of Peace by the International Federation for World Peace, Korea and was also awarded Sayyidina Imam Al Hassan Ibn Ali Peace Award (2015) in Abu Dhabi and Life Time Achievement Award by the Islamic Society of North America (ISNA) at Chicago in Sep 2015. Some of the other awards presented to him are the Padma Bhushan Award; the Rajiv Gandhi National Sadbhavna Award; the National Integration Award; the Communal Harmony Award; the Diwaliben Mohan Lal Mehta Award; the National Amity Award; the Dilli Gaurav Award; the FIE Foundation Award; the Urdu Academy Award; the Aruna Asaf Ali Sadbhavna Award; National Citizen's Award.

7. Maulana Wahiduddin Khan passed away on 21st April, 2021.



मौलाना वहीदुद्दीन खान (मरणोपरांत)

मौलाना वहीदुद्दीन खान एक इस्लामिक आध्यात्मिक विद्वान थे, जिन्होंने शांति को अपने जीवन का मिशन बनाया। वह अपने गांधीवादी विचारों के लिए जाने जाते हैं और अहिंसा को सफलता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका मानते थे।

2. आजमगढ़ में 01 जनवरी 1925, को जन्मे मौलाना वहीदुद्दीन खान की शिक्षा आजमगढ़ के पास सराय मीर के एक मदरसे, मदरसातुल इसिया में हुई। उनका परिवार शुरू से ही भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल था, इसलिए अपनी युवावस्था में, वह 1947 में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ही गांधीवादी मूल्यों में विश्वास करने वाले एक कट्टर राष्ट्रवादी बन गए और जीवन पर्यन्त वैसे ही रहे। वह अपने जिज्ञासु और खोजपूर्ण स्वभाव की वजह से प्राचीन इस्लामी शिक्षा और आधुनिक विज्ञान दोनों से अच्छी तरह से वाकिफ हो गए।

3. मौलाना वहीदुद्दीन खान ने इस्लामी शिक्षाओं को आधुनिक समय की शैली और भाषा में पेश करने की जरूरत महसूस की। उनकी प्रमुख चिंता आधुनिक युग के लिए इस्लाम को, शांति की उपयुक्त और सटीक विचारधारा के रूप में पेश करने की रही है। मूल अरबी शास्त्रों की गहरी समझ होने और आधुनिक विचार और विज्ञान के क्षेत्र में अपने व्यापक शोध के साथ, उन्होंने आधुनिक अर्थ में, दुनिया के सामने शांति, सहिष्णुता और सह अस्तित्व पर आधारित इस्लाम की सच्ची तस्वीर पेश की है। आजकल ऐसी धारणा प्रचलित है कि इस्लाम हिंसावादी पंथ है। वह इस धारणा का खंडन करते थे क्योंकि इस्लाम को गलत ढंग से प्रस्तुत करने के कारण इसे ठीक से समझा नहीं गया है।

4. मौलाना वहीदुद्दीन खान ने 1970 में नई दिल्ली में इस्लामिक सेंटर की स्थापना की। इसके बाद 1976 में इस सेंटर की उर्दू की एक मासिक पत्रिका अल-रिसाला शुरू की गई। इस पत्रिका में उनके अपने ही लेख छपा करते थे और जल्द ही यह उर्दू भाषी पाठकों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गई। उन्होंने लोगों को इस्लाम के शांतिपूर्ण पक्ष को समझाने, मुसलमानों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करने तथा सकारात्मक सोच और कार्यों को बढ़ावा देने के लिए काफी काम किया है। 'स्पिरिट ऑफ इस्लाम' शीर्षक से प्रकाशित इसका अंग्रेजी संस्करण, लोगों को सकारात्मकता की ओर मोड़ने में मदद करता है ताकि वे समाज के शांतिप्रिय सदस्य बन सकें।

5. मौलाना वहीदुद्दीन खान ने जनवरी 2001 में सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिच्युलिटी की स्थापना की। जैसा कि इस सेंटर के नाम से झलकता है, इसका उद्देश्य आध्यात्मिकता के माध्यम से शांतिप्रिय संस्कृति को बढ़ावा देना और उसे मजबूत बनाना है। उनके संरक्षण में, और उनके आध्यात्मिक ज्ञान से प्रेरित होकर, सेंटर की गतिविधियां लोगों को शांति का महत्व समझाने और उन्हें शांतिप्रिय बनने में मदद करती हैं। उन्होंने तजकिरुल कुरान के रूप में टिप्पणी के साथ-साथ उर्दू में कुरान का अनुवाद किया। इसका अंग्रेजी अनुवाद, द कुरान और हिंदी अनुवाद, पवित्र कुरान व्यापक रूप से पढ़े जाते हैं। उन्होंने इस्लाम, पैगम्बर का ज्ञान, आध्यात्मिकता और एक बहुजातीय समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर 200 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं।

6. मौलाना वहीदुद्दीन खान को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। उन्होंने 2002 में स्विट्जरलैंड के जुग में आयोजित शांति मंच पर परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए दुनिया भर में आंदोलन चलाने का प्रस्ताव पेश किया। इस अवसर पर उन्हें न्यूक्लियर डिस्आर्ममेंट फोरम एजी द्वारा डेमिर्जस पीस इंटरनेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया। उन्हें इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर वर्ल्ड पीस, कोरिया द्वारा शांतिदूत के खिताब से सम्मानित किया गया है और उन्हें अबू धाबी में सैयदीना इमाम अल हसन इब्न अली पीस पुरस्कार (2015) और सितंबर 2015 में शिकागो में इस्लामिक सोसायटी ऑफ नॉर्थ अमेरिका द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था। उन्हें प्रदान किए गए कुछ अन्य पुरस्कारों में पद्म भूषण पुरस्कार; राजीव गांधी राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार; राष्ट्रीय एकता पुरस्कार; सांप्रदायिक सद्भाव पुरस्कार; दिवालीबेन मोहन लाल मेहता पुरस्कार; राष्ट्रीय मैत्री पुरस्कार; दिल्ली गौरव पुरस्कार; एफआईई फाउंडेशन पुरस्कार; उर्दू अकादमी पुरस्कार; अरुणा आसफ अली सद्भावना पुरस्कार; राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार शामिल हैं।

7. 21 अप्रैल, 2021 को मौलाना वहीदुद्दीन खान का देहांत हो गया।